हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषा का विकास—'हिन्दी' विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है। आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी 'वियोगात्मक या विलिष्ट' भाषा है। भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय-परिवार की भाषा है।

J भारत में 4 भाषा परिवार है—

e भारोपीय, द्रविड, आस्ट्रिक व चीनी-तिब्बती

'भारत में बोलने वालो के प्रतिशत के आधार पर भारोपीय सबसे बड़ा परिवार भाषा है।'

J भारतीय आर्यभाषा

भारतीय आर्यभाषा को तीन कालो में विभक्त किया जाता है।

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा—1500 ई०पू०—500 ई० पू०
2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा—500 ई०पू०—1000 ई०
3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा—1000 ई से अब तक

हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रशं, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन प्रारंभिक हिन्दी का रूप लेती है।

सामान्यत:, हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ अपभ्रश से माना जाता है।

J हिन्दी का विकास क्रम

संस्कृत ⟶ पालि ⟶ प्राकृत ⟶ अपभ्रंश ⟶ अवहट्ट ⟶ प्राचीन/प्रांरभिक हिन्दी

अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास ⟶

अपभ्रश के भेद	आधुनिक भारतीय आर्यभाषा
शौरसेनी ⟶	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती
अर्द्धमागधी ⟶	पूर्वी हिन्दी
मागधी ⟶	बिहारी, उड़िया, बांग्ला, असमिया
खस ⟶	पहाड़ी (शौरसेनी से प्रभावित)
बाचड़ ⟶	पजांबी सिन्धी
महाराष्ट्री ⟶	मराठी

अवहट्ट 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप है। इसे 'अपभ्रंश' का अपभ्रश या परवर्ती अपभ्रंश कह सकते है। अवहटट 'अपभ्रश' और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के बीच की संक्रमणकालीन। संक्राति कालीन भाषा है। साहित्य में इसका प्रयोग 14 वीं सदी तक होता रहा है।

"अब्दुर रहमान, दामोदर पण्डित, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति आदि रचनाकारों ने अपनी भाषा को 'अवहट्ट' कहा है।

प्राचीन या पुरानी हिन्दी/प्रारंभिक या आरंभिक हिन्दी/आदिकालीन हिन्दी।

मध्यदेशीय भाषा परंपरा की विशिष्ट उत्तराधिकारिणी होने के कारण हिन्दी का स्थान आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ में सर्वोपरि है।

प्राचीन हिन्दी से अभिप्राय—अपभ्रशं—अवहट्ट के बाद की भाषा है।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित सिंधु नदी से सबंधित है। विदित है कि अधिकांश विदेशी यात्री और आक्रान्ता उत्तर—पश्चिम सिंहद्वार से ही भारत आये। भारत में आने वाले इन विदेशियों ने जिस देश के दर्शन किए वह 'सिधुं का देश था।' भारत के ईरान के साथ प्राचीन काल से ही संबंध थे और ईरानी सिंधु का हिन्दु कहते थे।

सिन्धु-हिन्दु 'स' का 'ह' में तथा 'ध' का 'द' में परिवर्तन करके बोलते थे। 'हिन्दु' से 'हिन्द' बना और फिर 'हिन्द' में फारसी भाषा के संबंध कारक प्रत्यय 'ई' लगने से 'हिन्दी' बन गया। हिन्दी का अर्थ है-हिन्द का इस प्रकार हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हिन्द देश के निवासियों के अर्थ में हुई। आगे चलकर यह शब्द 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

J हिन्दी शब्द का विकास

सिंधु ⟶ हिंदु ⟶ हिन्द + ई ⟶ हिन्दी।

हिन्दी शब्द मूलत: फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का

'हिन्दी शब्द भाषा विशेष का वाचक नहीं है बल्कि यह भाषा-समूह का नाम है। हिन्दी जिस भाषा-समूह का नाम है उसमें आज हिन्दी प्रदेश/क्षेत्र की 5 उपभाषाएँ तथा 22 बोलियाँ शामिल है।'

कबीर, जायसी, तुलसी आदि ने अपने साहित्य में प्रयुक्त हिन्दी को 'भाषा' ही कहा है।

J संस्कृत गहिरी कूपजल, भाखा बहता नीर

इसमें 'भाषा' को ही 'भाखा' कहा है

जिस रूप में आज हिन्दी भाषा बोली जाती है और समझी जाती है वह खड़ी बोली का साहित्यिक रूप है, जिसका विकास मुख्यत: 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ। खड़ी बोली का प्राचीनतम रूप 'पुरानी हिन्दी' में मिलता है।

13 वीं-14 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में 'अमीर खुसरो' ने खड़ी बोली कविता लिखी—

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

अमीर खुसरो ने 'हिन्दवी' या 'हिन्दुई' शब्द का प्रयोग कई स्थलों पर किया है

जैसे—'चुमन तूतिए हिंदम, अर रास्त पुरसी।
जे मन **हिन्दवी** पुर्सद्व ता नग्ज गोयम।।

हिन्दी के विकास के प्रारम्भ में ही नाथो और सिद्धो ने पूरे भारत में इस भाषा का प्रचार प्रसार किया। इसका श्रेय नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गुरू गोरखनाथ को जाता है। मध्यकाल में बज और अवधी बोलियो में साहित्य के अतिरिक्त शास्त्रों और ज्योतिष ग्रन्थों की भी रचना हुई है। ब्रजभाषा और अवधी में भक्ति आन्दोलन के प्रभाव से बहुत निरवार आया। ब्रजभाषा के समानांतर 'बजबुलि' का प्रयोग असम, बगांल और उड़ीसा में हो रहा था। इसके अतिरिक्त तेलुगु भाषी बल्लभाचार्य, मराठी के नामदेव और तुकाराम, गुजराती के नरसी मेहता और प्राणनाथ ने इस भाषा के विकास में विशेष योगदान दिया। कबीर, नानक आदि संतो ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को सारे देश में पहुँचाया। संतो की रचनाओं में ब्रज, अवधी, पजांबी, राजस्थानी, फारसी आदि अनेक बोलियों और भाषाओं के शब्दों का मिश्रण हुआ। हिन्दी के इस रूप को **'सधुक्कड़ी'** भाषा का नाम दिया गया है।

आधुनिक काल में खड़ी बोली में साहित्य की रचना होने लगी। विशेष रूप से गंद्य में। ब्रज और अवधी में साहित्य की रचना धीरे-धीरे कम होने लगी। भारतेन्दु ने हिन्दी को नये रूप में ढाला।

हिन्दी नयी चाल में ढली-1873 है। 'नयी चाल की हिन्दी' लगभग वही है, जिसे आज हम लिखते और पढ़ते है। धीरे-धीरे इस भाषा का स्वरूप निखरता गया।

'सरस्वती' पत्रिका के संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसको एकरूपता प्रदान करने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

अनेक अन्य साहित्यकारो—प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचन्द, दिनकर, अज्ञेय आदि ने इसको प्रौढ़ता प्रदान की।

भाषा के मौखिक व लिखित रूप

साधारणत: भाषा में अभिव्यक्ति के दो रूप है—

- मौखिक और लिखित

मातृभाषा—भाषी को भाषा का मौखिक रूप सहज में ही मिल जाता है जबकि अन्य भाषा-भाषी को उसको सीखना पड़ता है।

भाषा के लिखित रूप को सीखने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। समाज में एक दूसरे को जोड़ने में भाषा के लिखित रूप का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा का लिखित रूप ही ज्ञान के भण्डार को स्थायी रखता है और आने वाली पीढ़ी को सौपता है।

हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

बोली एक छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। बोली में साहित्य रचना नहीं होती।

उपभाषा अगर किसी बोली में साहित्य रचना होने लगती है और क्षेत्र का विस्तार हो जाता है तो वह उपभाषा कहलाने लगती है।

भाषा सहित्यकार जब उस उपभाषा को अपने साहित्य के द्वारा परिनिष्ठित सर्वमान्य रूप प्रदान कर देते हैं तथा उसका और क्षेत्र विस्तार हो जाता है तो वह भाषा कहलाने लगती है।

सर्वप्रथम एक अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1889 में 'मार्डन वरनाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' में हिन्दी का उपभाषाओं व बोलियों में वर्गीकरण प्रस्तुत किया। बाद में ग्रियर्सन ने 1894 ई० से भारत का भाषाई सर्वेक्षण आरंम्भ किया जो 1927 ई० में संपन्न हुआ। उनके द्वारा संपादित ग्रंथ का नाम है—

ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया'/इसमें इन्होने हिन्दी क्षेत्र की बोलियों को पाँच उपभाषाओं में बाटाँ है।

उपभाषा	बोलियाँ	मुख्य क्षेत्र
राजस्थानी	मारवाड़ी-(पश्चिमी रास्थानी) जयपुरी या ढुँढाड़ी-(पूर्वी राजस्थानी) मेवाती-(उत्तरी राजस्थानी) मालवी-(दक्षिणी राजस्थानी)	राजस्थान
पश्चिमी हिन्दी	कौरवी या खड़ी बोली बाँगरू या हरियाणवी ब्रजभाषा बुदेली कन्नौजी	हरियाणा, उत्तर प्रदेश
पूर्वी हिन्दी	अवधी बहेली छत्तीसगढ़ी	मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश
बिहारी	भोजपुरी मगही मैथिली	बिहार उत्तर प्रदेश
पहाड़ी	कुमाऊँनी गढवाली	उत्तराखडं, हिमाचल प्रदेश

अध्याय 2 प्रादेशिक भाषाएँ एवं 8वीं अनुसूची की समीक्षा

अनुच्छेद 345, 346 से स्पष्ट है कि भाषा के संबंध में राज्य सरकारों को पूरी छूट दी गई। संविधान के इन्ही अनुच्छेदों के अधीन हिन्दी भाषा राज्यों में हिन्दी राजभाषा बनी। हिन्दी इस संमय 9 राज्यों—

उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखडं, राजस्थान, हरियाणा, व हिमाचल प्रदेश—तथा 1 केन्द्रशासित प्रदेश-दिल्ली-की राजभाषा है।

अनुच्छेद 347 यदि किसी राज्य का पर्याप्त अनुपात चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली कोई भाषा राज्य द्वारा अभिज्ञात की जाय तो राष्ट्रपति उस भाषा को सरकारी अभिज्ञा दे सकता है। समय-समय पर राष्ट्रपति ऐसी अभिज्ञा देते रहे हैं, जो 8 वीं अनुसूची में स्थान पाते रहे हैं। जैसे 1967 में सिंधी, 1992 में कोकणी, मणिपुरी वे नेपाली एवं 2003 में बोडो, डोगरी, मैथिली व संथाली।

अध्याय 3 (SH, HC आदि की भाषा अर्थात न्याय व विधि। कानून की भाषा की समीक्षा

अनुच्छेद 348, 349—न्यांय व कानून की भाषा उन राज्यों में भी जहाँ हिन्दी को राजभाषा मान लिया गया है, अंग्रेजी ही है। नियम, अधिनियम, विनियम तथा विधि का प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी में होने के कारण सारे नियम अंग्रेजी में ही बनाये जाते हैं। बाद में उनका अनुवाद मात्र कर दिया जाता है। इस प्रकार, न्याय व कानून के क्षेत्र में हिन्दी का समुचित प्रयोग हिन्दी राज्यों में भी अभी तक नही हो सका है।

भाषाएँ—8वीं अनुसूची में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 प्रादेशिक भाषाओं का उल्लेख है। इस अनुसूची मे आरंभ में 14 भाषाएँ 1. असम, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू थी

- 15वी भाषा 'सिंधी' को (21 वाँ संशोधन, 1967 ई) में जोड़ा
- तत्पश्चात कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली को (71 वॉ संशोधन, 1992) में जोड़ा गया।
- जिससे इसकी संख्या 18 हो गई।
- तदुपरात बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली को (92 वाँ सशोधन 2003) में शामिल किया गया और इस प्रकार इस अनुसूची में 22 भाषाएँ हो गई।

अध्याय 1 (संघ की भाषा)

अनुच्छेद 343—संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि मे लिखित हिन्दी घोषित की गई है।

अनुच्छेद 343(3) के द्वारा सरकार ने यह शक्ति प्राप्त कर ली कि वह इस 15 वर्ष की अवधि के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकती है।

अनुच्छेद 344—राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारभं से पाँच वर्ष की समाप्ति पर तथा तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ में दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और अष्ठम अनुसूची में उल्लिखित विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगाा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे तथा आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया भी परिभाषित करेगा।

अध्याया 4 (विशेष निर्देश) की समीक्षा

अनुच्छेद 350—किसी शिकायत के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी पदाधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का प्रत्येक व्यक्ति का हक होगा

अनुच्छेद 351—हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश—हिन्दी भाषा की प्रचार-वृद्धि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृत के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, तथा उसकी आत्मीयता में

हस्तक्षेप किये बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली, और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भंजर के लिए मुख्यत: संस्कृत के तथा अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्त्तव्य होगा।

राष्ट्रभाष आन्दोलन (हिन्दी आन्दोलन) से

J संबंधित धार्मिक—सामाजिक संस्थाएँ

नाम	मुख्यालय	स्थापना	संस्थापक
ब्रहम समाज	कलकत्ता	1828	राजा राम मोहन राय
प्रार्थना समाज	बंबई	1867	आत्मारगं पाण्डुरंग
आर्य समाज	बंबई	1875	दयानंद सरस्वती
थियोसोफिकल सोसायटी	अडयार, मद्रास	1882	कर्नल H.S. आलकाट एंव मैडम बलावत्सकी
सनातन धर्म	वाराणसी	1895	पं० दीन दयाल शर्मा
रामकृष्ण मिशन	बेलुर	1897	विवेकानंद

J हिन्दी आन्दोलन से संबंधित साहित्यिक संस्थाएँ

नाम	मुख्यालय	स्थापना	संस्थापक
नागरी प्रचारिणी सभा	काशी/वाराणसी	1893	संस्थापक त्रयी—श्याम सुंदर दास, रामनारायण मिश्र, व शिव कुमार सिंह
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	प्रयाग	1910	प्रथम सभापति—मदन मोहन मालवीय
गुजरात विद्यापीठ	अहमदाबाद	1920	
हिन्दुस्तान एकेडमी	इलाहाबाद	1927	
दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार मद्रास संथा (पूर्व नाम)—हिन्दी साहित्य सम्मेलन	मद्रास	1927	
अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ	नई दिल्ली	1964	
नागरी लिपि परिषद	नई दिल्ली	1975	
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा	पुणे	1937	
बंबई हिन्दी विद्यापीठ	बंबई	1938	

Gupta Classes

हिंदी वर्णमाला

हिंदी वर्णमाला के उच्चरित स्तर पर दो तत्व हैं—स्वर और व्यंजन। वर्णों के निर्माण में इन दोनो का योग रहता है।

J हिंदी के स्वर वर्ण

स्वर वर्ण उन्हें कहा जाता है। जिनका उच्चारण बिना किसी अवरोध के होता हैं हिंदी में स्वर वर्णों की संख्या ग्यारह हैं।

हिंदी के स्वर वर्णों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

- **ह्रस्व स्वर :** अ, ई, उ, ऋ
- **दीर्घ स्वर :** आ, ई, ऊ
- **संयुक्त स्वर :** ए, ए, ओ, औ

J हिंदी के व्यंजन वर्ण

व्यंजन वर्ण उन्हें कहा जाता है जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' की ध्वनि छिपी रहती है। 'अ' के बिना व्यंजन का उच्चारण सम्भव नहीं है। जैसे क > क् ± ख > ख् ± अ। हिंदी में व्यंजन वर्णों की संख्या तैंतीस हैं। इनकी निम्नलिखित श्रेणियाँ है :

(1) स्पर्श
(2) अंत:स्थ
(3) ऊष्म

J १. व्यंजन

ये कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श से बोले जाते हैं। इनके पाँच वर्ग हैं—

1. क वर्ग—क, ख, ग, घ, ङ—कण्ठय
2. च वर्ग—च, छ, ज, झ, ञ—तालव्य
3. ट वंग—ट, ठ, ड ढ, ण—मुद्र्धा
4. त वर्ग—त, थ, द, ध, न—दंत्य
5. प वर्ग—प, फ, ब, भ, म—ओष्ठ्य

J २. अंत:स्थ व्यंजन

अंत:स्थ व्यंजन का उच्चारण जीभ, ताल, दांत और ओठो के पर परस्पर सटाने से होता है। इसलिए, ये अर्द्ध स्वर कहलाते हैं। अंत:स्थ व्यंजन चार हैं—य; र, ल, व।

J ३. ऊष्म व्यंजन

ऊष्मा व्यंजनों का उच्चारण रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है। ये चार हैं—श; ष, स, ह।

हिंदी के नए वर्ण : हिंदी वर्णमाला में पाँच नए व्यंजन—क्ष, त्र, ज्ञ, ड, ढ़—नए जोड़े गए हैं।

अं = अनुस्वार

अ: = विसर्ग

श्र = मिश्र व्यंजन

क्ष, त्र, ज्ञ, संयुक्त व्यंजन

ङ, ढ़ = द्विगुण व्यंजन

"शब्दों में अन्त में या मध्य में ङद्ध ढ़ का प्रयोग होता है। जबकि प्रारम्भ में ड़, ढ़ कभी नही आते, वहाँ मूल वर्ण ड, ढ, ही प्रयुक्त होता है।" वाह्य प्रयत्न के आधार पर सम्पूर्ण व्यंजनों को दो भागो में विभाजित किया गया है।

1. अल्पप्राण⟶क, ग, ड, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व, ह

"प्रत्येक वर्ग समूह का 1^{st}, 3^{rd} और 5^{th} और अंत:स्थ"

2. महाप्राण⟶ख, घ, छ, झ, ड, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, सं प्रत्येक वर्ग समूह का 2^{nd} और 4^{th} व उष्म व्यंजन।

सघोष⟶ध्वनि की दृष्टि से जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में स्वरतत्रियां झंकृत होती है। सघोष कहते हैं।

3^{rd}, 4^{th} व 5^{th}⟶ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, व , भ, म, य, र, ल, व

अघोष⟶जिनमें स्वर तन्त्रिया झकृंत नहीं होती है।

1^{st} व 2^{nd}⟶क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, स, ष

अल्पप्राण⟶जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाले श्वास की मात्रा अल्प रहती है।

महाप्राण⟶जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास की अधिक मात्रा निष्कासित होती है।

Gupta Classes

शब्द

वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहा जाता है। लिखित और मौखिक दोनो रूपो में शब्द का एक अपना महत्व है।

हिन्दी के शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार है—

1. रचना के आधार पर
2. उत्पत्ति/इतिहास के आधार पर
3. रूप/प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर—रचना के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार है।

1. रूढ़—जिन शब्दों के सार्थक खण्ड न हो सकें। और जो अन्य शब्दो के मेल से न बने।

जैसे—रात, दिन, डर, घर, जर, फल, नल आदि

2. यौगिक—यौगिक का अर्थ है मेल से बना हुआ। जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दो से मिलकर बनता हो। उसे यौगिक शब्द कहते हैं।

जैसे—विज्ञान (वि + ज्ञान)

सामाजिक (समाज + इक)

"यौगिक शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है—

ऊपसर्ग से, प्रत्यय से और समास से।"

3. योग रूढ़—वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, परन्तु जिनका अर्थ रूढ़ (विशेष अर्थ) हो जाता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते है

यौगिक होते हुए भी ये शब्द एक इकाई हो जाते है यानि ये सामान्य अर्थ को न प्रकट कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं।

जैसे—पीताम्बर, जलज, लंबांदर, दशानन, नीलकंठ, गिरधारी, दशरथ

पीताम्बर—पीताम्बर का सामान्य अर्थ है 'पीला वस्त्र' किन्तु यह विशेष अर्थ में "श्रीकृष्ण" के लिए प्रयुक्त होता है।

जलज—जलज का सामान्य अर्थ है जल से जन्मा। किन्तु यह विशेष अर्थ में केवल कमल के लिए प्रयुक्त होता है।

J २. उत्पत्ति/इतिहास के आधार पर—

उत्पत्ति या इतिहास के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते है—

1. तत्सम—'तत्सम' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है—"संस्कृत के समान" हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से सीधे आए है और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अत: संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का-त्यो प्रयोग में लाते हैं। तत्सम शब्द कहलाते हैं—

जैसे—अग्नि, वायु, माता, पिता, प्रकाश, पत्र, सूर्य आदि

तद्भव—'तद्भव(तत् + भव) शब्द का अर्थ है—संस्कृत शब्दों से विकृत होकर बने शब्द।

हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे है जो निकले तो संस्कृत से ही है, पर प्राकृत, अपभ्रंश पुरानी हिन्दी से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिलते है, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

जैसे—पत्थर, घर, आसूँ, काज, फूल, आग आदि

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
उज्जवल	उज्जल	उजला
कर्पूर	कप्पूर	कपूर
संध्या	संझा	साँझ

देशज—ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए है, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं।

जैसे—थैला, गड़बड़, पगडी, लोटा, झोंला, टाँग आदि

विदेशज/आगत—हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे है तो विदेशी मूल के है, पर परस्पर संपर्क वे कारण यहाँ प्रचलित हो गए है। अत: अन्य देश की भाषा से आये हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे—आर्डर, कम्पनी, कैंम्प, क्रिकेट इत्यादि।

J अधिक प्रचलित वर्ग के विदेशज शब्द

हिन्दी में फारसी शब्दो की संख्या लगभग 3500, अंग्रेजी शब्दो की संख्या लगभग 3000, एवं अरबी शब्दों की संख्या लगभग 2500 है।

1. अरबी—अजब, अजीब, अदालत, अंक्ल, अल्लाह, किताब, फैसला, हलवाई, अदालत, मुकदमा, कानून, गुनाह, बगावत, तोता, अनार, अमरूद, बत्तख, मौसम दवा, किला, तस्वीर, महल, किराया, लिफाफा कानून, आदि।

2. फारसी—पजामा, अंगूर, अखबार, गवाह, गुलाब, चश्मा, चरस, चेहरा, जेब, जल्दी, दिल, दिमाग, दीवार, देहात, बाग, बुखार, बीमार, मरीज, शायरी, शर्म, शहर, शराब, शहनाई, सब्जी, सरकार, हिन्दी, आजाद आदि।

3. तुर्की—उर्दू, कैंची, कुर्ता, कलगी, काबू, चाकू, चकमक चिक, चम्मच चेचक, बन्दुक, सुराग, सराय, लाश, सौगात आदि।

पश्तो—अखरोट, अटकल, कलूटा, खर्राटा, खचड़ा, गुण्डा, गटागट, गड़बड़, चरवचरव, टसमस, डंगर, पठान, पटाखा, भड़ास, तहस-नहस, हड़बड़ी आदि।

पुर्तगाली—अनन्नास, अलमारी, आलीपन, आया, इस्त्री, इस्पात, काजू, कमरा, कप्तान, कर्नल, काफी, गोदाम, गोभी, गमला, चाय, चाबी, तौलिया, पपीता, फीता, बाल्टी, बोतल, नीलाम, संतरा, साबुन आदि

अंग्रेजी—अफसर, अस्पताल, हॉस्टल, कॉलेज, कलर, कम्पनी, कलेक्टर, मशीन, मोटर, इंजन, पैट, सूट, टाई, टीशर्ट

संकर : दो भिन्न स्त्रोतो से आए शब्दों के मेल से बने नए शब्दों को संकर शब्द कहते हैं; जैसे

छाया (संस्कृत) + दार (फारसी) = छायादार

पान (हिन्दी) + दान (फारसी) = पानदान

रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी) = रेलगाड़ी

सील (अंग्रेजी) + बंद (फारसी) = सीलबंद

3. रूप/प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(i) विकारी शब्द : वे शब्द जिनमें लिंग, वचन व कारक के आधार पर मूल शब्द का रूपांतरण हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे—

लड़का पढ़ रहा है। (लिंग परिर्वन) लड़की पढ़ रही है।

लड़का दौड़ रहा है। (वचन परिर्वन) लड़के दौड़ रहे हैं।

लड़के के लिए आम लाओं। (कारक परिवर्तन) लड़कों के लिए आम लाओ

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया शब्द विकारी शब्द हैं।

संज्ञा : ब्राह्मण, जयचंद, पटना, हाथ, पाँव, लड़का, लड़की, किताब, पुलिस, सफाई, ममता, बालपन, ढेर, कर्म, सरदी, सिरदर्द आदि।

सर्वनाम : मैं, तू, वह यह, इसे, उसे, जो, जिसे, कौन, क्या, कोई, सब, विरला आदि।

क्रिया : खेलना, कूदना, सोना, जागना, लेना, देना, खाना, पीना, जाना, आना आदि।

(ii) अविकारी शब्द : जिन शब्दों का प्रयोग मूल रूप में होता है और लिंग, वचन व कारक के बाधार पर उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता अर्थात् जो शब्द हमेशा एक-से रहते हैं, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—आज, में, और, आहा आदि।

सभी प्रकार के अव्यय शब्द अविकारी शब्द होते हैं।

क्रिया विशेषण अव्यय : आज, कल, अब, कब, परसों, यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, कैसे, क्यों।

सबंध बोधक अव्यय : में, से, पर, के ऊपर, के नीचे, से आगे, से पीछे, की ओर।

समुच्चयबोधक अव्यय : और, परन्तु, या, इसलिए, तो, यदि, क्योंकि।

विस्मयादिबोधक अव्यय : आहा! हा! हाय! ओह! वाह! वाह! राम राम! या अल्लाह! या खुदा!

4. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं—

(i) एकार्थी शब्द : जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है, एकार्थी शब्द कहलाते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा के शब्द इसी कोटि के शब्द हैं, जैसे—गंगा, पटना, जर्मन, राधा, मार्च आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द : जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं, जैसे—

शब्द	**अनेक अर्थ**
हार	गले की माला, पराजय
कनक	सोना, धतूरा
कर	हाथ, टैक्स
अर्थ	प्रयोजन, धन

(iii) समानार्थी/पर्यायवाची शब्द : हिन्दी भाषा में अनेक शब्द ऐसे हैं जो समान अर्थ देते हैं, उन्हें समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे—

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
आकाश	नभ, गगन, आसमान
सूर्य	रवि, भानु, भास्कर
फूल	पुष्प, सुमन, प्रसून

(iv) विपरीतार्थी/विलोम शब्द : जो शब्द विपरीत अर्थ का बोध कराते हैं, विपरीतार्थी या विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे—

शब्द	**विलोम शब्द**
जय	पराजय
सच	झूठ
पाप	पुण्य
दिन	रात

Gupta Classes

वाक्य

वाक्य : सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है।

वाक्य के भदे : वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उनका विभाजन हम दो आधारों पर कर सकते हैं—

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद : अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं—

1. विधानवाचक	**2.** निषेधवाचक
3. आज्ञावाचक	**4.** प्रश्नवाचक
5. इच्छावाचक	**6.** संदेहवाचक
7. विस्मयवाचक	**8.** संकेतवाचक

2. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(a) सरल वाक्य/साधारण वाक्य : जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता हैं, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक ही समापिका क्रिया (करता है, किया, करेगा आदि) होती है; जैसे—मुकेश पढ़ता है। शिल्पी पत्र लिखती है। राकेश ने भोजन किया।

(b) संयुक्त वाक्य : जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अत:, फिर भी, तो, किन्तु, परन्तु, लेकिन, पर आदि।) से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे—वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो पर असत्य नहीं। उसने बहुत परिश्रम किया किंतु सफलता नहीं मिली।

(c) मिश्रित/मिश्र वाक्य : जिन वाक्यों में एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (गौण) उपवाक्य हों तथा जो आपस में 'कि'; जो ...वह..., 'जितना...उतना..., 'जैसा....वैसा..., 'जब...तब..., 'जहाँ...वहाँ..., 'जिधर...उधर..., 'अगर/यदि...तो..., आदि से मिश्रित (मिले-जुले) हों, उनहें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य वधिय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती है; जैसे—मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते। जो लड़का कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है। यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे।'

विराम-चिह्न

'विराम' का अर्थ है—'रुकना' या 'ठहरना'। वाक्य को लिखते अथवा बोलते समय बीच में कहीं थोड़ा-बहुत रुकना पड़ता है। जिससे भाषा स्पष्ट, अर्थवान एवं भावपूर्ण हो जाती है। लिखित भाषा मे इस ठहराव को दिखाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्हें ही विराम-चिह्न कहा जाता है।

वाक्य-शुद्धि

वाक्य भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई होता है। अतएव परिष्कृत भाषा के लिए वाक्य-शुद्धि का ज्ञान आवश्यक है। वाक्य-रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से संबंधित या अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती हैं। इन्ही को आधार बनाकर परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं

J I-संज्ञा-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं। *(बड़ी-बड़ी बाधाएँ)*
2. सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं। *(कड़ियाँ)*
3. पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा। *(साहस)*
4. कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है। *(का आधार)*
5. प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है। *(धार पर)*
6. नगर की सारी जनसंख्या भूखी है। *(जनता)*
7. वह मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं देता। *(मेरी बात पर)*
8. जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा चरितार्थ होती है। *(कहावत)*
9. मुझे सफल होने की निराशा है। *(आशा नहीं)*
10. इस समस्या की औषध उसके पास है। *(का समाधान)*
11. गोलियों की बाढ़। *(बौछार)*

J लिंग-संबंधी अशुद्धियाँ

1. परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए। *(बदलनी)*
2. हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया। *(दी गयी)*
3. मुझे मजा आती है। *(आता)*
4. रामायण का टीका। *(की)*
5. देश की सम्मान की रक्षा करो। *(के)*
6. लड़की ने जोर से हँस दी। *(दिया)*
7. दंगे में बालक, युवा, नर-नारी सब पकड़ी गयीं। *(पकड़े गये)*

J (ii) वचन-संबंधी अशुद्धियाँ

1. सबों ने यह राय दी। *(सब)*
2. उसने अनेक प्रकार की विद्या सीखीं। *(विद्याएँ)*
3. मेरे आँसू से रूमाल भींग गया। *(आँसुओं)*
4. ऐसी एकाध बातें सुनकर दु:ख होता है। *(बात)*
5. हमारे सामानों का ख्याल रखियेगा। *(सामान)*
6. वे विविध विषय से परिचित हैं। *(विषयों)*
7. इस विषय पर एक भी अच्छी पुस्तकें नहीं है। *(पुस्तक)*

J कारक-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हमने यह काम करना है। *(हमें)*
2. मैंने राम को पूछा। *(से)*
3. सब से नमस्ते। *(को)*
4. जनता के अन्दर असंतोष फैल गया। *(में)*
5. नौकर का कमीज। *(की)*
6. मैंने नहीं जाना। *(मुझे)*
7. मेरे नये पते से चिट्ठियाँ भेजना। *(पर)*

J सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मेरे से मत पूछो। *(मुझ से)*
2. मेरे को यह बात पसंद नहीं। *(मुझे)*
3. तेरे को अब जाना चाहिए। *(तुझे)*
4. मैंने नहीं जाना। *(मुझे)*
5. आप आपका काम करो। *(अपना)*
6. जो सोवेगा वह खोवेगा। *(सो)*
7. आप जाकर ले लो। *(तुम)*
8. वह सब भले लोग हैं। *(वे)*
9. आँख में कौन पड़ गया? *(क्या)*
10. मैं उन्होंके पिताजी से जाकर मिला। *(उनके)*

J III. विशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

1. उसे भारी प्यास लगी है। *(बहुत)*
2. जीवन और साहित्य का घोर संबंध है। *(घनिष्ठ)*
3. मुझे बड़ी भूख लगी है। *(बहुत)*
4. यह एक गहरी समस्या है। *(गंभीर)*
5. वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा थी। *(बहुत या बहुत भारी)*
6. इसका कोई अर्थ नहीं है। *(कुछ भी)*

Gupta Classes

7. इस वीरान जीवन में। *(नीरस)*
8. उसकी बहुत हानि हुई। *(बड़ी)*
9. राजेश अग्रिम बुधवार को आएगा। *(आगामी)*
10. दूध का अभाव चिन्तनीय है। *(चिन्ताजनक)*

J IV. क्रिया-संबंधी अशुद्धियाँ

1. वह कुरता डालकर गया है। *(पहनकर)*
2. पगड़ी बोढ़कर आओ। *(बाँधकर)*
3. वह लड़का मोटर हाँक सकता है। *(चला)*
4. छोटी उम्र शिक्षा लेने के लिए है। *(पाने)*
5. वे दस-बारह पशु उठा ले गए। *(हाँक)*
6. राधा ने माला गूँध ली। *(गूँथ)*
7. अपना हस्ताक्षर लगा दो। *(कर)*
8. उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। *(किया)*
9. हमें यह सावधानी लेनी होगी। *(बरतनी)*
10. वहाँ घना अँधेरा घिरा था। *(छाया)*

J V. अव्यय-संबंधी अशुद्धियाँ

1. यद्यपि वह बीमार था परन्तु वह स्कूल गया। *(तथापि)*
2. पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गयी है। *(विद्वतापूर्वक)*
3. आसानीपूर्वक यह काम कर लिया। *(आसानी से)*
4. शनै: उसको सफलता मिलने लगी। *(शनैःशनैः)*
5. एकमात्र दो उपाय हैं। *(केवल)*
6. यह पत्र आपके अनुसार है। *(अनुरूप)*
7. यह बात कदापि भी सत्य नहीं हो सकती। *(कदापि)*
8. वह अत्यन्त ही सुन्दर है। *(अत्यन्त)*
9. सारे देश भर में अकाल हैं। *(सारे देश में)*
10. मैं पहुँचा ही था जब कि वह आ गया। *(कि)*

J VI. पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. छात्रों ने मुख्य अतिथि को एक फूलों की माला पहनाई। *(फूलों की एक माला)*
2. भीड़ में चार पटना के व्यक्ति भी थे। *(पटना के चार व्यक्ति)*
3. कई बैंक के कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। *(बैंक के कई कर्मचारियों)*
4. आप जाएँगे क्या? *(क्या आप जाएँगे?)*

J VII. द्विरुक्ति/पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ

1. मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ बशर्ते कि तुम मेरा कहा मानो। *(बशर्ते/शर्त है कि)*
2. वह अभी शैशव अवस्था में है। *(शैशव/शिशु अवस्था)*
3. मध्यकालीन युग में कलाओं की बहुत उन्नति हुई। *(मध्यकाल/मध्ययुग)*
4. यौवनावस्था की बुराइयों से बचो। *(यौवन/युवा अवस्था)*
5. साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं की संख्या कम है। *(लेखिकाओं/महिला लेखकों)*
6. नौजवान युवकों को दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए। *(नौजवानों/युवकों)*
7. आपका भवदीय। *(आपका/भवदीय)*
8. प्रात: काल के समय टहलना चाहिए। *(प्रातः काल/प्रातः समय)*
9. राजस्थान का अधिकांश भाग रेतीला है। *(अधिकांश/अधिक भाग)*
10. वे परस्पर एक दूसरे से उलझ पड़े। *(परस्पर/एक दूसरे से)*

J VIII. अधिक्पदत्व-संबंधी अशुद्धियाँ

निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन अक्षरों मे छपे पद अनावश्यक हैं—

1. मानव ईश्वर की सबसे उत्कृष्टतम कृति है।
2. हीन भावना से ग्रस्त मोहन अपने को दुनिया का सबसे निकृष्टतम व्यक्ति समझता है।
3. सीता नित्य गीता को पढ़ती है।
4. उसने गुप्त रहस्य प्रकट कर दिये।
5. माली जल से पौधों को सींच रहा था।

J IX. शब्द-ज्ञान-संबंधी अशुद्धियाँ

1. बाण बड़ा उपयोगी शस्त्र है। *(अस्त्र)*
2. लाठी गड़ा उपयोगी अस्त्र है। *(शस्त्र)*
3. चिड़ियाँ गा रही हैं। *(चहक)*
4. वह नित्य गाने की कसरत करता है। *(का अभ्यास/का रियाज)*
5. सोहन नित्य दण्ड मारता है। *(पेलता)*
6. इस समय सीता की आयु सोलह वर्ष है। *(उम्र/अवस्था)*
7. धनीराम की सौभाग्यवती पुत्री का विवाह कल होगा। *(सौभाग्यकांक्षिणी)*
8. कर्मवान व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। *(कर्मवीर)*

Gupta Classes

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वाक्य के अशुद्ध भाग (त्रुटिपूर्ण भाग) का चयन कीजिए : मै पटना गया (a)/तो उस समय (b)/मेरे पास (c)/केवल बीस रुपये मात्र थे। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
2. वाक्य के अशुद्ध भाग का चयन कीजिए : राम राज्य में (a)/शेर और बकरी एक घाट (b)/पर पानी पीती थी। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
3. राजा दशरथ को (a)/चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (b)/पैदा हुए थे। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
4. एक वर्ष से मैं जिस पुस्तक की रचना में संलग्न था (a)/आज उसे छपे आकार में देखकर (b)/मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं है। (c) कोई त्रुटि नहीं (d).
5. छायावाद के युग में (a)/ राष्ट्रवादी विचारधारा के (b)/उन्नत स्वर (c)/सुनने को मिलता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
6. आज भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में (a)/शिष्टाचार के रूप में (b)/जाना जाता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
7. राम के धनुष भंग करते ही (a)/दूसरे राजाओं के (b)/वक्ष पर साँप लोटने लगे। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
8. जब पृथ्वी पर पाप और अत्याचार बढ़ते हैं (a)/तब ईश्वर किसी-न-किसी महापुरुषों के रूप में (b)/पृथ्वी पर अवतार लेता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
9. अपराधी और (a)/निरपराधी का (b)/अन्तर करना (c)/कठिन है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e).
10. दीपावली पर कुछ लोग (a)/चमचमाती चाँदी के बर्तन (b)/खरीदने का लोभ संवरण न कर सके। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
11. चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी (a)/जगती तल में, (b)/पृथ्वी तल और आकाश में फैली हुई हैं। (c) कोई त्रुटि नहीं (d)
12. स्वतन्त्रता-संग्राम में प्राण गँवाने वाले (a)/वीरों के सम्मान में सरकार ने (b)/एक दिन के सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
13. महात्माओं का (a)/वैराग भी समय (b)/के परिवर्तन की अपेक्षा (c)/नहीं रखता। (d) कोई त्रुटि नहीं (e).
14. जीवन पथ पर (a)/हमें सतत रूप से (b)/ चलते रहना चाहिए। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d).
15. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
    (a) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ाते रहें।
    (b) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपसी लड़ाई से दूर उलझे रहें।
    (c) नेताओं का हित इसमें है कि लोग आपस में लड़ते रहें।
    (d) नोताओं का हित इसमें है कि लोग उनसे लड़ते रहें।
16. प्रत्येक देशवासियों को (a)/देश की सेवा में (b)/तन, मन, धन अर्पण करना चाहिए। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
17. आतंकवाद शायद एक दिशाहीन (a)/उद्देश्यकीन अंधेरा है (b)/जो विश्व शांति एवं प्रगति को निगल रहा है। (c)/कोई त्रुटि नहीं। (d)
18. तुम कक्षा में आते हो (a)/तो तुम्हारी पुस्तक (b)/साथ क्यों नहीं लाते?(c) /कोई त्रुटि नहीं (d)
19. गुणी मनुष्य कहता है (a)/कि मैं विविध प्रकार के दु:खों को (b)/सहन करके भी दु:खी नहीं हूँ। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
20. फूल मे सुगंध (a)/होती है और (b)/तितली के पास सुन्दर पंख।(c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
21. स्त्री का हृदय गुलाब की पंखुड़ियों की तरह (a)/अत्यन्त कोमल (b)/एवं संवेदनशील होता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
22. जब तक तुम अपने अभिप्राय का अभिप्रेत (a)/स्पष्ट रूप से नहीं कहते (b)/मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूँगा (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
23. मै आज सुबह (a)/आपके घर गया था (b)/किन्तु तुम घर (c)/पर नहीं मिले। (d) कोई त्रुटि नहीं (e)
24. प्रत्येक देशवासी को विभिन्नता में (a)/एकीकरण करने की शक्ति को उजागर करने वाले (b)/तत्वों की पहचान करनी चाहिए। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
25. रेखा ने अमित को आवाज लगाकर कहा (a)/कि राहुल का दूध (b)/रसोई में गैस के ऊपर रखा है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
26. तुष्टीकरण करने की नीति अपनाकर (a)/न व्यक्ति आगे बढ़ सकता है (b)/औन न राष्ट्र (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
27. गम्भीर नदियों, विस्तृत सागरों (a)/एवं उत्तुंग पर्वत शृंगों को पार करना भी (b)/अब कठिन नहीं रहा। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
28. अध्यापक ने (a)/आज हमारे को (b)/नया पाठ पढ़ाया। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
29. मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि (a)/आपके द्वारा इतने परिश्रम से कमाया गया (b)/यह धन आखिर किस काम में आएगा। (c)/बन्द रहीं। (d)
30. झगड़ों के कारण (a)/नगर की अधिकतर (b)/दुकानें आज भी (c)/बन्द रहीं (d)
31. बुरा से बुरा आदमी (a)/भी सम्मान (b)/चाहता है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
32. आपके इन्हीं गुणों के कारण ही तो लोग (a)/तुम्हारी यशोगाथा का वर्णन करते (b)/अघाते नहीं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
33. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
    (a) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द है।
    (b) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द रहेगा।
    (c) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द होना है।
    (d) पिछले सोमवार को स्कूल बन्द था।
34. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—
    (a) उन्हें एक पुत्र है (b) उनको एक पुत्र है।
    (c) उनका एक पुत्र है (d) उनके एक पुत्र है।
35. इधर आजकल (a)/मौसम की वर्षा (b)/हो रही है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
36. जिस व्यक्ति की आत्मा, (a)/जितनी विशाल है, (b)/वह उतना ही बड़ा महापुरुष है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
37. पतिव्रता नारी ने इस रहस्य को (a)/अपने हृदय के भीतर ही (b)/अन्तर्निहित रखा। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
38. सेठजी (a)/बड़े (b)/सज्जन पुरुष हैं। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
39. मै सुबह से निकल पड़ा (a)/और पैदल ही (b)/अपने दोस्त के गाँव में पहुँच गया। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
40. राजेन्द्र प्रसार जी ने अपनी आत्मकथा में (a)/स्वातंत्र्य-संघर्ष का (b)/जीवन अंकन किया है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
41. हड़ताल के प्रस्फुटन से (a)/व्यापारिक संस्थान बंद होने की (b)/आशंका की जा रही है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)
42. जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा (a)/शरीदर की शोभा बढ़ जाता है (b)/उसी प्रकार अलंकारों से (c)/भाषा में लालित्य आ जाता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)
43. शीर्षक को चयन (a)/करते समय अनुच्छेद में निहित (b)/भावों और विचारों की (c)/परख कर लेनी चाहिए। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)
44. बड़ों की बातों को (a)/आद से (b)/सुनना चहिए। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

45. अरुणाचल प्रदेश में (a)/प्रात:काल (b)/के समय का दृश्य (c)/अत्यंत मनोरम होता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

46. सीता राम की (a)/आज्ञाकारी (b)/पत्नी थी। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

47. तुमने अपनी (a)/स्वेच्छा से (b)/यह काम (c)/किया है।(d) /कोई त्रुटि नहीं (e)

48. व्यक्ति के हर प्रकार के कष्टों को (a)/वह पल भर में (b)/दूर करती है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

49. कारगिल (a)/युद्ध में सेना (b)/वीरता के साथ लड़े। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

50. जब वह (a)/मेरे घर आई (b)/तो आठ बजा था।(c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

51. मेरी समझ में (a)/अभी तक यही नहीं आया (b)/कि इस बात का (c)/मेरे से क्या संबंध है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

52. मै (a)/कुछ का कुछ (b)/लिख दिया है (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

53. मीठे वचन (a)/बोलना (b)/उत्तम गुण है। (c)/कोई त्रुटि नहीं (d)

54. उसकी (a)/आँखों से (b)/आँसू (c)/बहते हैं। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

55. निम्नलिखित में वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) सीता की चरित्र अच्छा है। (b) सीता का चरित्र अच्छी है।

(c) सीता का चरित्र अच्छी है। (d) सीता का चरित्र अच्छा है।

56. निम्नलिखित में वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) मै गाने की कसरत करता हूँ।

(b) मै गाने का अभ्यास करता हूँ।

(c) मै गाने का शौक कर रहा हूँ।

(d) मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ।

57. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

(a) यह मेरा पुस्तक है। (b) श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं।

(c) बन्दूक एक उपयोगी शस्त्र है

(d) बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती है।

58. जो मनुष्य (a)/राष्ट्र-प्रेमी होता है (b)/उसको देश की एक न एक वस्तु से (c)/प्रेम हो जाता है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

59. समय का सदुपयोग (a)/राष्ट्र-प्रेमी होता है (b)/उसको देश की एक न एक वस्तु से (c)/प्रेम हो जाता है (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

60. गाँधीजी (a)/पक्के ईश्वर के (b)/भक्त थे। (c) कोई त्रुटि नहीं (d)

61. शीर्षक को छोटा, (a)/आकर्षक और (b)/विषय से संबद्ध (c)/रखना चाहिए। (d) कोई त्रुटि नहीं (e)

62. सांस्कृतिक जागृति (a)/के पीछे (b)/राष्ट्रीय (c)/जागृति आती है। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

63. संसार के (a)/प्रत्येक कोने-कोने (b)/में अनगिनत भाषाएँ (c)/बोली जाती हैं। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

64. काव्य की शोभा (a)/अथवा चमत्कार (b)/कभी शब्दों में होता है (c)/और कभी अर्थों में। (d)/ कोई त्रुटि नहीं (e)

65. विद्यार्थियों ने (a)/प्राचार्य को (b)/एक गेंदे की (c)/माला पहनाई। (d)/कोई त्रुटि नहीं (e)

66. विद्यार्थियों ने (a)/प्राचार्य को (b)/एक गेंदे की (c)/माला पहनाई। (d) कोई त्रुटि नहीं (e)

67. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) वह दंड पाने योग्य है (b) वह दंड लेने योग्य है।

(c) वह दंड के योग्य है (d) वह दंड देने योग्य है।

68. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) भारत में अनेक जाति हैं। (b) भारत में अनेकों जाति हैं।

(c) भारत में अनेक जातियाँ हैं। (d) भारत में अनेकों जातियाँ हैं।

69. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) उसे अनुत्तीर्ण होने का संशय है।

(b) उसे अनुत्तीर्ण होने का शक है।

(c) उसे अनुत्तीर्ण होने की आशा है।

(d) उस अनुत्तीर्ण होने की आंशका है।

70. निम्नलिखित में से वाक्य के शुद्ध रूप का चयन कीजिए—

(a) फल बच्चे को काटकर खिलाओ।

(b) बच्चे को काटकर फल खिलाओं।

(c) बच्चे को फल काटकर खिलाओ।

(d) काटकर फल बच्चे को खिलाओ।

Gupta Classes

संज्ञा

शब्द और पद : जब शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है और वाक्य के बाहर होता है तो यह 'शब्द' होता है, किन्तु जब शब्द वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसे 'पद' कहा जाता है। मलतब कि स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर शब्द 'शब्द' कहलाता है, किन्तु वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है।

पद के भेद : पद के पांच भेद होते हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय।

किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, ब्राह्मण पश्चिम, सागर, वाराणसी, होली, नारी, बहन आदि।

संज्ञा के प्रकार : I. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा तीन प्रकार की होती है—रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

II. अर्थ की दृष्टि से संज्ञा पाँच प्रकार की होती है—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

J संज्ञा के भेद

संज्ञा के 5 भेद हैं

1. जातिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—मनुष्य, घर, पहाड़, नदी, जानवार, इत्यादि।

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—राम, गंगा, गाँधी, काशी, सांगर, कृष्ण, आर्यावर्त, श्रावण, दिवाली, पानीपत, रामचरितमानस, रूसी इत्यादि।

3. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे—**ठोस पदार्थ :** सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, ऊन आदि; द्रव **पदार्थ :** तेल, पानी, घी, दही आदि; **गैसीय पदार्थ :** धुआँ, ऑक्सीजन आदि।

4. समूहवाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति का वाचक न होकर समूह/समुदाय के वाचक हैं। जैसे—वर्ग, टीम, सभा, समिति, आयोग, परिवार, पुलिस, सेना, अधिकारी, कर्मचारी, ताश, टी-सेट, आर्केस्ट्रा आदि।

5. भाववाचक संज्ञा

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय में प्रत्यय लगाकर होता है। जैसे—बूढ़ा, बुढ़ापा, लड़का-लड़कपन (जातिवाचक संज्ञा से), मीठा-मिठास, अपना-अपनापन, मम-ममता (सर्वनाम से), दूर-दूरी, वाह-वाह-वाहवाही (अव्यय से)।

लिंग

लिंग—संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की जाति (नर या मादा) का बोध होता हों, उसे लिंग कहते हैं। संस्कृत में लिंग के तीन भेद हैं—पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग। हिंदी में लिंग के दो भेद हैं—पुलिंग और स्त्रीलिंग।

1. पुंलिग शब्द

1. अकारान्त, आकारान्त शब्द प्राय: प्रलिंग होते हैं। जैसे राम, सूर्य, क्रोध, समुद्र, चीता, घोड़ा, कपड़ा, घड़ा आदि।

2. वे भाववाचक संज्ञाएं जिनके अन्त में त्व, व, य होता है, वे प्राय: पुंलिंग होती हैं।। जैसे—गुरुत्व, गौरव, शौर्य आदि।

3. जिन शब्दों के अन्त में पा, पन, आव, आवा, खाना जुड़े होते हैं, वे भी प्राय: पुंलिंग होते हैं। जैसे—बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, घुमाव, भुलावा, पागलखाना।

2. स्त्रीलिंग शब्द

1. आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लता, रमा, ममता।

2. इकारान्त शब्द भी प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं—रीति, तिथि, हानि (किन्तु इसके अपवाद भी हैं—कवि, कपि, रवि पुंलिंग हैं)

3. ईकारान्त शब्द भी प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—नदी, रोटी, टोपी, (किन्तु अपवाद भी हैं। जैसे—हाथी, दही, पानी पुंलिंग हैं)

4. आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा प्रत्यय वाले शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लिखाई, डिबिया, मिलावट, घबराहट, सुन्दरता, महिमा।

स्त्रीलिंग प्रत्यय : पुंलिंग शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों को शब्द में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्री० प्रत्यय कहते हैं।

ई	बड़ा-बड़ी, छोटा-छोटी, भला-भली
इनी	योगी-योगिनी, कमल-कमलिनी
इन	धोबी-धोबिन, तेली-तेलिन
नी	मोर-मोरनी, चोर-चोरनी
आनी	जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी
आइन	ठाकुर-ठकुराइन, पंडित-पडिताइन, मुगल-मुगलानी
इया	बेटा-बिटिया, लोटा-लुटिया

Gupta Classes

वचन

वचन—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं। वचन का शाब्दिक अर्थ संख्या वचन हैं वचन के दो प्रकार हैं—(1) एकवचन, बहुवचन। वे शब्द जिनसे एक पदार्थ या व्यक्ति का बोध होता है, उन्हें **एकवचन** कहते हैं। जैसे—नदी, लड़का, घोड़ा, बच्चा इत्यादि। वे शब्द जिनमें पदार्थों अथवा व्यक्तियों का बोध होता है तो उन्हें **बहुवचन** कहते हैं। जैसे—नदियां, लड़के, घोड़ें, बच्चे इत्यादि।

1. एकवचन : शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक पदार्थ का ज्ञात होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—बालक, घोड़ा, किताब, मेज आदि।

2. बहुवचन : शब्द के जिस रूप से अधिक वस्तुओं या पदार्थों का ज्ञान होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—बालकों, घोड़ों, किताओं, मेजों आदि।

बहुवचन बनाने में प्रयुक्त प्रत्यय—

1. ए : आकारान्त पुंलिंग, तद्भव संज्ञाओं मे अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बहुवचन हो जाता है।जैसे

घोड़ा—घोड़े लड़का—लड़के गधा—गधे

2. एं : अकारान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में एं जोड़ने पर वे बहुवचन बन जाते हैं। जैसे—

पुस्तक	पुस्तकें	बात	बातें
सड़क	सड़कें	गाय	गायें
लेखिका	लेखिकाएं	माता	माताएं

3. यां : यां इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जुड़कर उसे बहुवचन बना देता है। जैसे—

जाति	जातियां	रीति	रीतियां
नदी	नदियां	लड़की	लड़कीयां

4. ओं : ओं का प्रयोग करके भी बहुवचन बनते हैं। जैसे—

कथा	कथाओं	साधु	साधुओं
माता	माताओं	बहन	बहनों

5. कभी-कभी कुछ शब्द भी बहुवचन बनाने के लिए जोड़े जाते हैं। जैसे—वृन्द (मुनिवृन्द), जन (युवजन), गण (कृषकगण), वर्ग (छात्रवर्ग), लोग (नेता लोग) आदि।

वाक्य में वचन संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं जिनका निराकरण करना आवश्यक है, जैसे—

(i) कुछ शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

प्राण	मेरे प्राण छटपटाने लगे।
दर्शन	मैंने आपके दर्शन कर लिए।
आंसू	आँखों से आँसू निकल पड़े।
होश	शेर को देखते ही मेरे होश उड़ गए।
बाल	मैंने बाल कटा दिए।
हस्ताक्षर	मैंने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

(ii) कुछ शब्द नित्य एकवचन होते हैं। जैसे—

माल	माल लूट गया।
जनता	जनता भूल गई।
सामान	सामान खो गया।
सामग्री	हवन सामग्री जल गई।
सोना	सोना का भाव कम हो गया।

(iii) आदरणीय व्यक्ति के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

पिताजी आ रहे हैं।

तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।

आप क्या चाहते हैं?

(iv) 'अनेकों' शब्द का प्रयोग गलत है। एक का बहुवचन अनेक है, अत: अनकों का प्रयोग अशुद्ध माना जाता है। जैसे

1. वहाँ अनेकों लोग थे। (अशुद्ध)
   वहाँ अनेक लोग थे। (शुद्ध)
2. बाग में अनेकों वृक्ष थे। (अशुद्ध)
   बाग में अनेक वृक्ष थे। (शुद्ध)

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
तेरे को कहा जाना है?	तुझे कहाँ जाना है?
वह घोड़े के ऊपर बैठा है।	वह घोड़े पर बैठा है।
रोगी से दाल खाई गई।	रोगी के द्वारा दाल खाई गई।
मैं कलम के साथ लिखता हूं।	मैं कलम से लिखता हूँ।
मुझे कहा गया था।	मुझसे कहा गया था।
लड़का मिठाई को रोता है।	लड़का मिठाई के लिए रोता है।
इस किताब के अन्दर बहुत कुछ है।	इस किताब में बहुत कुछ है।
मैंने आज पटना जाना है।	मुझे आज पटना जाना है।
तेरे को मेरे से क्या लेना-देना?	तुझे मुझसे क्या लेना-देना?
उसे कह दो कि भाग जाय।	उससे कह दो कि भाग जाय।
सीता से जाकर के कह देना।	सीता से जाकर कह देना।
तुम्हारे से कोई काम नही हो सकता।	तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
मैं पत्र लिखने को बैठा।	मैं पत्र लिखने के लिए बैठा।
मैंने राम को यह बात कह दी थी।	मैंने राम से यह बात कह दी थी
इन दोनों घरों में एक दीवार है।	इन दोनों घरों के बीच एक दीवार है।

सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे—मैं, तुम वह, यह इत्यादि।

J सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्न भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषों या स्त्रियों के नामों के बदले प्रयोग में आते हैं। जैसे—मैं, हम (उत्तम पुरुष) तू, तुम, आप (मध्यम पुरुष) वह, वे, यह, वे (अन्य पुरुष)।

2. निजवाचक सर्वनाम

निजवाचक सर्वनाम में वक्ता स्वयं का ही उल्लेख करता है। कभी-कभी इस सर्वनाम रूप में 'आप' का प्रयोग निम्न प्रकार होता है—

मैं **आप** वहीं से आया हूँ।

अपने से बड़ों का आदर करो।

3. निश्चयावाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम में वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता हैं, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—

यह कोई नया काम नहीं हैं।

रोटी मत खाओ, **वह** जली हुई है।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो तो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—

ऐसा न हो कि **कोई** आ जाए।

उसने **कुछ** नहीं खाया।

5. संबंधवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—

वह कौन है, **जो** पड़ा रो रहा है।

वह **जो** न करे, **सो** थोड़ा है।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे

कौन आता है? तुम **क्या** खा रहे हो?

किसने तुम्हें पूछा था? ऐसा **क्यों** चाहते हो?

Gupta Classes

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है उन्हें विशेषण कहते हैं और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं। जैसे—काला आदमी, लाल घोड़ा, अच्छा लड़का, सुन्दर लड़की इत्यादि।

J विशेषण के भेद

प्राय: गुण, संख्या और परिणाम के आधार पर इस प्रकार किए जाते हैं—

1. सार्वनामिक विशेषण

पुरुष वाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के अतिरिक्त अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा से पहले आते हैं, तब वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—

वह नौकर नहीं आया।

यह घोड़ा अच्छा है।

2. गुणवाचक विशेषण

जिस शब्द से संज्ञा का गुण, दशा, स्वभाव आदि का पता चलता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—नया, पुराना, काला-भूरा, दुबला, अमीर आदि।

3. संख्यावाचक विशेषण

जिन शब्दों में संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का पता चलता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—

चार घोड़े, **तीस** दिन, **कुछ** लोग, **सब** लड़के इत्यादि।

4. परिमाणबोधक विशेषण

जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण का बोध होता है, उन्हें परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। इनके भी दो भेद हैं—

निश्चित परिमाणबोधक — दस किलो घी, पांच क्विंटल गेहूं।

अनिश्चित परिमाणबोधक — बहुत घी, थोड़ा दूध।

प्रविशेषण : वे शब्द जो विशेषणों की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहे जाते हैं। जैसे—

1. राजु बहुत तेज दौड़ता है।

यहा 'तेज' विशेषण है और 'बहुत' प्रविशेषण है क्योंकि यह तेज की विशेषता बतला रहा है।

2. रामा अत्यन्त सुन्दर है।

यहाँ 'सुन्दर' विशेषण है तथा 'अत्यन्त' प्रविशेषण है। उनमें जिन प्रत्ययों को जोड़ा जाता है, उन्हें विशेषणार्थक प्रत्यय कहते हैं। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण	प्रत्यय	संज्ञा	शब्द विशेषण
ईला	चमक	चमकीला	ई	धन	धनी
इक	अर्थ	आर्थिक	वान	दया	दयावान
मान	बुद्धि	बुद्धिमान	ईय	भारत	भारतीय

विशेषण की तुलनावस्था : इन्हें तुलनात्मक विशेषण भी कहा जाता है। विशेषण की तीन अवस्थाएं तुलनात्मक रूप में हो सकती हैं—मूलावस्था (Positive Degree), उत्तरावस्था (Comparative Degree) एवं उत्तमावस्था (Superlative Degree)। जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था	मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम	सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम	बृहत्	बृहत्तर	बृहत्तम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम	महत्	महत्तर	महत्तम

विशेषण का पद-परिचय : वाक्य मे विशेषण पदों का अन्वय (पद-परिचय) करते समय उसका स्वरूप—भेद, लिंग, वचन, कारक और विशेष्य बताया जाता है। जैसे—

काला कुत्ता मर गया।

काला—विशेषण, गुणवाचक, रंगबोधक, पुलिंग, एकवचन, विशेष्य—कुत्ता।

मुझे थोड़ी बहुत जानकारी है।

थोड़ी बहुत—विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, कर्मवाचक, विशेष्य—जानकारी।

Gupta Classes

क्रिया

क्रिया का मूल 'धातु' है। जिन मूल अक्षरों से क्रियाएँ बनती है, उन्हें धातु कहते हैं या वाक्य में जिस शब्द से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे—सोना, खाना, पीना, करना, जाना इत्यादि।

J क्रिया के भेद

रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद है।

(अ) सकर्मक क्रिया

वह क्रिया, जिसका कर्म होता है या जिसके साथ कर्म की संभावना होती है। उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अर्थात् जिस क्रिया के कार्य का संबंध तो कर्त्ता से हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु अर्थात् कर्म पर पड़े। जैसे—

श्याम आम खाता है।

'आम' का सीधा संबंध 'खाने' से है। खाना यहाँ सकर्मक क्रिया है और 'आम' कर्म कारक है।

(ब) अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं का कार्य और फल कर्त्ता पर हो, वे 'अकर्मक' कहलाती हैं। अकर्मक क्रियाओं का कर्म नहीं होता, क्रिया का कार्य और फल दूसरे पर न पड़कर कर्त्ता पर पड़ता है। जैसे—श्याम सोता है। श्याम कर्त्ता है, सोने की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है, सोने का फल उसी पर पड़ता है। इसलिए, 'सोना' क्रिया अकर्मक हैं।

क्रिया के कुछ अन्य भेद

(अ) सहायक क्रिया

ये क्रियाएं मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहयोग देती है। जैसे—वह खाता है, मैंने पढ़ा था, तुम जगे हुए थे, वे सुन रहे थे इत्यादि।

(ब) पूर्वकालिक क्रिया

इसमें कर्त्ता द्वारा एक क्रिया को खत्म करते ही तुरंत दूसरी क्रिया शुरू की जाती है। जैसे—उसने **नहाकर** भोजन किया, किशन ने मंच पर **पहुँचकर** कहा इत्यादि।

(स) संयुक्त क्रिया

जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे—

घनश्याम रो चुका > रो—चुका

किशोर रोने लगा > रोने—लगा

संयुक्त क्रिया में पहली क्रिया प्राय: प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है। **जैसे**—मैं पढ़ सकता हूँ। इस वाक्य में 'सकना' क्रिया 'पढ़ना' क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है।

(य) द्विकर्मक क्रिया

कुछ क्रियाएं एक कर्मवाली और दो कर्मवाली होती है। जैसे—

एक कर्म—**राम ने रोटी** खायी।

दो कर्म—मैं **लड़के को वेद** पढ़ाता हूँ।

Gupta Classes

अव्यय

ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

ये शब्द सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहेते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, कभी बदलता नहीं। जैसे—आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, तब, और, अतः, इसलिए आदि।

अव्यय के भेद : अव्यय के चार भेद बताए गए हैं :

(1) क्रिया विशेषण (Adverb) : जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं :

(a) स्थानवाचक

स्थितिवाचक	यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
दिशावाचक	इधर, उधर, दाएं, बाएं।

(b) कालवाचक

समयवाचक	आज, कल, अभी, तुरन्त।
अवधिवाचक	रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य।
बारंबारतावाचक	हर बार, कई बार, प्रतिदिन

(c) परिमाणवाचक

अधिकताबोधक	बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
न्यूनताबोधक	जरा, थोड़ा, किंजित्, कुछ।
पर्याप्तिबोधक	बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
तुलनाबोधक	कम, अधिक, इतना, उतना।
श्रेणीबोधक	बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा।

(d) रीतिवाचक

ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो, हाँ, जी, यथासम्भव।

(2) सम्बन्धबोधक (Preposition) : जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं। जैसे—वह दिन भर काम करता रहा। मैं विद्यालय तक गया था। मनुष्य पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता।

अर्थ के आधार पर सम्बन्धबोधक अव्यय के चौदह प्रकार हैं—

स्थानवाचक	आगे, पीछे, निकट, समीप, सामने, बाहर
दिशावाचक	आसपास, ओर, तरफ, दायाँ, बायाँ
कालवाचक	पहले, बाद, आगे, पश्चात, अब, तक
साधनवाचक	द्वारा, माध्यम, सहारे, जरिए
उद्देश्यवाचक	लिए, वास्ते, हेतु
व्यतिरेकवाचक	अलावा, अतिरिक्त, सिवा, बगैर, बिना, रहित
विनिमयवाचक	बदले, एवज, स्थान पर, जगह पर
सादृशवाचक	समान, तुल्य, बराबर, योग्य, तरह
विरोधवाचक	विरोध, विरुद्ध, विपरीत
साहचर्यवाचक	साथ, संग, सहित, समेत
विषयवाचक	संबंध, विनय, आश्रय, भरोसे
संग्रहवाचक	लगभग, भर, मात्र, तक, अन्तर्गत
तुलनावाचक	अपेक्षा, समक्ष, समान
कारणवाचक	कारण, परेशानी से, मारे

(3) समुच्चयबोधक (Conjunction) : दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे :

सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।

यहां 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

समुच्चयबोधक अव्यत मूलत : दो प्रकार के होते हैं :

(i) समानाधिकरण (ii) व्यधिकरण

पुन: समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद हैं :

संयोजक	और, व, एवं, तथा।
विभाजक	या, वा, अथवा, किंवा, नहीं तो।
विरोध-दर्शक	पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, मगर, वरन्।
परिणाम-दर्शक	इसलिए, अतः, अतएव।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार उपभेद हैं :

कारणवाचक	क्योंकि, जोकि, इसलिए कि।
उद्देश्यवाचक	कि, जो, ताकि।
संकेतवाचक	जो....तो, यदि...तो, यद्यपि...तथापि।
स्वरूपवाचक	कि, जो, अर्थात्,यानी।

(4) विस्मयादिबोधक (Interjection) : जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, घृणा, आदि भाव व्यंजित होते हैं तथा जिनका संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे—

हाय! वह चल बसा।

इस अव्यय के निम्न उपभेद हैं :

हर्षबोधक	वाह!, आह!, धन्य!, शाबाश!
शोकबोधक	हाय!, आह!, त्राहि-त्राहि!
आश्चर्यबोधक	ऐं!, क्या!, ओहो!, हैं!
स्वीकारबोधक	हाँ!, जी हाँ!, अच्छा!, जी!, ठीक!
अनुमोदनबोधक	ठीक!, अच्छा!, हाँ-हाँ!
तिरस्कारबोधक	छिः!, हट!, धिक्!, दुर्।
सम्बोधनबोधक	अरे!, रे!, अजी!, हे!, अहो!

निपात: मूलत: निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। लेकिन ये शुद्ध अवयव नहीं होते। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समूह या पूरे वाक्य को अन्य (अतिरिक्त) भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का समग्र अर्थ प्रभावित होता है। निपात नौ प्रकार के होते हैं—

स्वीकृतिबोधक	हाँ, जी,जी हाँ।
नकारबोधक	जी नहीं, नहीं।
निषेधात्मक	मत।
प्रश्नबोधक	क्या।
विस्मयादिबोधक	क्या, काश।
तुलनाबोधक	सा।
अवधारणाबोधक	ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।
आदरबोधक	जी।
बलप्रदायक	तो, ही, भी, तक, भर, सिर्फ, केवल।

हिन्दी में अधिकांशत: निपात उस शब्द या शब्द-समूह के बाद आते हैं, जिनको वे विशिष्टता या बल प्रदान करते हैं, जैसे—

रमेश ने ही मुझे मारा था। (अर्थात् मुझे ही मारा था और किसी को नहीं।)

रमेश ने मुझे मारा ही था। (अर्थात् मारा ही था गाली आदि नहीं दी थी।)

इस प्रकार निपात वाक्यों में नया अथवा गहन भाव प्रकट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अव्यय का पद-परिचय (Parsing of Indeclinables) :

वाक्य में अव्यय का पद-परिचय देने के लिए अव्यय, उसका भेद, उससे संबंध रखने वाला पद-इतनी बातों का उल्लेख करना चाहिए। जैसे—

वह धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे-अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, क्रिया चलता की विशेषता बताने वाला।

Gupta Classes

काल

काल : क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार के समय तथा उसकी पूर्णता अथवा अपूर्णता का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं—

1. वर्तमान काल (Present Tense) : वर्तमान काल में किया व्यापार की निरन्तरता रहती है। इसके पांच भेद हैं :

सामान्य वर्तमान (Imperfect/Simple Present/Present Indefinite)	यह पढ़ता है।
तात्कालिक वर्तमान (Present Continuous)	यह पढ़ रहा है।
पूर्ण वर्तमान (Present Perfect)	वह पढ़ चुका है।
संदिग्ध वर्तमान (Doubtful Present)	वह पढ़ता होगा।
संभाव्य वर्तमान (Present Conjunctive)	वह पढ़ता हो।

(ii) भूतकाल (Past Tense) : भूतकाल में क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है। इसके छः भेद हैं :

सामान्य भूत (Simple Past/Past Indefinite)	सीता गयी।
आसन्न भूत (Recent Past)	सीता गयी है।
पूर्ण भूत (Past Perfect)	सीता गयी थी।
अपूर्ण भूत (Past Imperfect)	सीता जा रही थी।
संदिग्ध भूत (Doubtful Past)	सीता गयी होगी।
हेतुहेतुमद्भूत (Conditional)	सीता जाती। (क्रिया होने वाली थी, पर हुई नहीं)

(iii) भविष्यत् काल (Future Tense) : भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध भविष्यत् काल से होता है। इसके तीन भेद हैं :

सामान्य भविष्यत् (Simple Future/Futre Indefinite)	राम पढ़ेगा।
संभाव्य भविष्यत् (Future Conjunctive)	सम्भव है राम पढ़े।
हेतुहेतुमद् भविष्यत् (Conditional Future)	छात्रवृत्ति मिले, तो राम पढ़ें। (इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर है)

क्रिया का पद-परिचय (Parsing of Verb) : क्रिया के पद-परिचय में क्रिया, क्रिया का भेद, वाच्य, लिंग, पुरुष, वचन, काल और वह शब्द जिससे क्रिया का संबंध हैं, बतानी चाहिए। जैसे—

1. राम ने पुस्तक पढ़ी।

पढ़ी—क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भूत, कर्म पुस्तक से सम्बन्धित।

2. मोहन कल जायेगा।

जायेगा—क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, पुलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भविष्यत्, कर्ता मोहन से सम्बन्धित।

Gupta Class

सन्धि

दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, वह संधि कहलाता है। संधि में पहले शब्द के अंतिम वर्ण एवं दूसरे शब्द के आदि वर्ण का मेल होता है।

उदाहरण : देव + आलय = देवालय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
मन: + योग = मनोयोग

J संधि के भेद

संधि के पहले वर्ण के आधार पर संधि के तीन भेद किये जाते हैं—स्वर-संधि, व्यंजन-संधि व विसर्ग संधि।

स्वर संधि

स्वर-संधि : स्वर के बाद स्वर अर्थात् दो स्वरों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है, स्वर-संधि कहलाता है; जैसे—

सूर्य + अस्त = सूर्यास्त महा + आत्मा = महात्मा

स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं—

1. दीर्घ-संधि, 2. गुण-संधि, 3. वृद्धि संधि, 4. यण-संधि
5. अयादि-संधि।

नोट : आ ई ऊ को 'दीर्घ', अ ए ओ को 'गुण', ऐ और को 'वृद्धि', य र ल व को 'यण्' एवं अय आय अव आव...को 'अयादि' (अय + आदि) कहते हैं।

J १. दीर्घ सन्धि

दीर्घ सन्धि→जब दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं तब दीर्घ सीन्ध होती है।

अ + अ = आ वेद + अन्त = वेदान्त
अ + आ = आ रत्न + आकर = रत्नाकर
आ + अ = विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
आ + आ = कारावास
इ + इ = ई = अत + इव = अतीत
रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
इ + ई = ई = हरि + ईश = हरीश
ई + ई = ई = नदी + इन्द्र = नदीन्द्र
ई + ई = ई = रजनी + ईश = रजनीश
उ + उ = ऊ = सु + उक्ति = सूक्ति
ऊ + ऊ = ऊ = वधू + उमि = वध
उ + ऊ = ऊ
लघु + उर्मि
उ + ऊ = ऊ
लघु = उर्मि = लघूर्मि
ऊ + उ = ऊ
वधू + उत्सव = वधूत्सव

J २. गुण सन्धि

गुण सन्धि→यदि अ, आ के बाद ई, ई हो तो दोनो मिलाकर ए। अ, आ के बाद उ, ऊ हो तो दोनो मिलकर ओ। तथा अ, आ के बंद ऋ हो तो दो नो मिलकर 'अर' हो जाते है।

अ + ई = ए
अ + इ = ए
आ + ई = ए
आ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ऊ = ओ
आ + उ = ओ
अ + ई = ए देवेन्द्र = देव + इन्द्र
नगेन्द्र — नग — इंन्द्र
वीरेन्द्र — वीर + इन्द
अ + ई = ए दिनेशे = दिन + ईश
सुरेश = सुर + ईश
परमेन्श्वर = परम + ईश्वर
(आ + इ = ए) = राजेन्द्र = राज + इन्द्र
रमेन्द्र = रमा + इन्द्र
रूपेन्द्र = रूपा + इन्द्र
आ + ई = ए = महेश्वर—महा + ईश्वर
राकेश—राका + ईश
राजेश = राजा + ईश
अ + उ = ओ = उत्तरोत्तर = उत्तर + उत्तर
परोपकार = पर + उपकार
सूर्योदय = सूर्य + उदय
अ + ऊ = ओ — नवोढ़ा = नव + ऊढा = न
आ + उ = महोदय = महा + उदय
महोत्सव—महा + उत्सव
अ + ऋ = अर = राजर्षि = राज + ऋषि
सप्तर्षि = सप्त + ऋषि
ब्रहम + ऋषि = ब्रहमर्षि
आ + ऋ = अर महर्षि = महा + ऋषि

J ३. वृद्धि सन्धि

वृद्धि सन्धि → अ या आ के पश्चात ए या ऐ हो तो दोनो को मिलाकर ऐ
अ या आ के पश्चात ओ या ओ हो तो दोनो को मिलाकर = औ हो जाता है।

अ + ए = ऐ = लोकैषणा = लोक + एषणा
मत + ऐक्य = मतैक्य
तथैव = तथा + एव
सदैव = सदा + एवं
महेश्वर्य = महा + ऐश्वर्य
वनौषधि = वन + ओषीध
महौज = महा + ओज
परमौदार्य = परम + औदार्य

J ४. यण सन्धि

यण सन्धि→इ, ई, उ, ऊ के बाद यदि कोई भिन्न तथा विजातीय स्वर आता है। इ, ई का य उ, ऊ का व तथा ऋ की जगह र हो जाता है।

इ + अ = य	यदि + अपि = यद्यापि
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि
इ + उ = यु	अति + उत्तम = अत्युत्तम
इ + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून
इ + ए = ये	नदयअर्पण = नदी + अर्पण
इ + अ = य	देवी + आगमन = देव्यागमन
ई + आ = या	मनु + अंतर = मन्वतर
उ + अ = व	सु + आगत = स्वागत
उ + आ = वा	अन्वेषण = अनु + वेषण
उ + ए = वे	पित्रनुमति = पितृ + अनुमति
ऊ + आ = वा	मातृ + आनन्द = मात्रा नन्द
उ + अ = व	
ऋ = आ = र	

Gupta Classes

J ५. अयादि सन्धि

अयादि सन्धि = ए, ऐ, ओ, औ का मेल किसी विजातीय स्वर से होने पर अय आय अव् आव् हो जाता है

ए + अ = अय्	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय्	गै + अन = गायन
ओ + अ = अव	पो + अन = पवन
औ + अ = आव	पौ + अक = पावक
ओ + ई = अवि	नौ + इक = नाविक
औ + इ = आवि	

व्यंजन सन्धि

व्यंजन-संधि : व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन-संधि कहते हैं; जैसे—

वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)
सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)
उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

नोट : व्यंजन का शुद्ध रूप हल् वाला रूप (जैसे—क् ख् ग्...) होता है।

J व्यंजन-संधि के नियम

1. वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन : किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग ज ड द ब) या चौथे वर्ण (घ झ ढ ध भ) अथवा अंत:स्थ व्यंजन (य र ल व) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने की वर्ग के तीसरे वर्ण (ग् ज् ड् द् ब्) में परिवर्तित हो जाता है; जैसे—

क् का ग् होना : दिक् + गज = दिग्गज
दिक् + अंत = दिगंत
दिक् + विजय = दिग्विजय
वाक् + ईश = वागीश

च् का ज् होना : अच् + अंत = अजंत
अच् + आदि = अजादि

ट् का ड् होना : षट् + आनन = षडानन
षट् + रिपु = षड्रिपु

त् का द् होना : भगवत् + भजन = भगवद्भजन
उत् + योग = उद्योग
सत् + भावना = सद्भावना
सत् + गुण = सद्गुण

प् का ब् होना : अप् + ज = अब्ज
अप् + धि = अब्धि
सुप + अंत = सुबंत

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवों वर्ण में परिवर्तन : यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुत: केवल न म) से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ् ञ् ण् न् म्) हो जाता है; जैसे—

क् का ङ् होना : वाक् + मय = वाङ्मय
ट् का ण् होना : षट् + मुख = षण्मुख
त् का न् होना : उत् + मत्त = उन्मत्त
तत् + मय = तन्मय
चित् + मय = चिन्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. 'छ' संबंधी नियम : किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है; जैसे—

स्व + छंद = स्वच्छंद
परि + छेद = परिच्छेद
अनु + छेद = अनुच्छेद
वि + छेद = विच्छेद

4. त् संबंधी नियम

(i) 'त्' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है; जैसे—
उत् + चारण = उच्चारण
उत् + चरित = उच्चरित
जगत् + छाया = जगच्छाया
सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हो तो 'त्' 'ज्' में बदल जाता है; जैसे—
सत् + जन = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी
विपत् + जाल = विपज्जाल
उत् + ज्वल = उज्जवल
उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त, क्रमश: 'ट्' 'ड्' में बदल जाता है ; जैसे—
उत् + लास = उल्लास
तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लेख = उल्लेख

(v) 'त्' के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है; जैसे—
उत् + श्वास = उच्छ्वास
सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है; जैसे—

5. 'न' संबंधी नियम : यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है; जैसे
परि + नाम = परिणाम
प्र + मान = प्रमाण
राम + अयन = रामायण
भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है; जैसे—
सम् + कलन = संकलन
सम् + गति = संगति
सम् + चय = संचय
परम् + तु = परंतु
सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है; जैसे—
सम् + योग = संयाग
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + लाप = संलाप
सम् + विधान = संविधान
सम् + शय = संशय
सम् + सार = संसार
सम् + हार = संहार

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे—
सम् + मान = सम्मान

Gupta Classes

सम् + मति = सम्मति

विशेष : आजकल सुविधा के लिए पंचमाक्षर के स्थान पर प्राय: अनुस्वार का ही प्रयोग होता है।

7. 'स' संबंधी नियम : 'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है; जैसे—

वि + सम = विषम
वि + साद = विषाद
सु + समा = सुषमा

विसर्ग-संधि

विसर्ग-संधि : विसर्ग के बाद स्वर या व्यजंन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग-संधि कहते हैं, जैसे—

नि: + आहार = निराहार
दु: + आशा = दुराशा
तप: + भूमि = तपोभूमि
मन: + योग = मनोयोग

J विसर्ग-संधि के प्रमुख नियम

1. विसर्ग का 'ओ' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले 'अ' और बाद में 'अ' अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह' हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है; जैसे—

मन: + अनुकूल = मनोनुकूल	अध: + गति = अधोगति
तप: + बल = तपोबल	वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध
तप: + भूमि = तपोभूमि	पय: + द = पयोद
पय: + धन = पयोधन	मन: + रथ = मनोरथ
मन: + योग = मनोयोग	मन: + हर = मनोहर

अपवाद : पुन: एवं अंत: में विसर्ग का र् हो जाता है; जैसे—

पुन: + मुद्रण = पुनर्मुद्रण	पुन: + जन्म = पुनर्जन्म
अंत: + धान = अंतर्धान	अंत: + अग्नि = अंतरग्नि

2. विसर्ग का 'र्' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ', 'उ', 'ऊ' या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है; जैसे—

नि: + आशा = निराशा
नि: + धन = निर्धन
नि: + बल = निर्बल
नि: + जन = निर्जन
आशी: + वाद = आशीर्वाद
दु: + बल = दुर्बल
दु: + जन = दुर्जन
नि: + धारण = निर्धारण
दु: + उपयोग = दुरुपयोग
दु: + ऊह = दुरुह
बहि: + मुख = बहिर्मुख

3. विसर्ग का 'श्' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है; जैसे—

नि: + चिंत = निश्चिंत
नि: + छल = निश्छल
दु + शासन = दुश्शासन
दु: + चरित्र = दुश्चरित्र

4. विसर्ग का 'ष्' हो जाता है : विसर्ग के पहले 'इ', 'उ' और बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है; जैसे—

नि: + कपट = निष्कपट
नि: + कंटक = निष्कंटक
धनु: + टंकार = धनुष्टंकार
नि: + ठुर = निष्ठुर
नि: + प्राण = निष्प्राण
नि: + फल = निष्फल

अपवाद : दु: + ख = दु:ख

5. विसर्ग का 'स्' हो जाता है : विसर्ग के बाद यदि 'त' या 'थ' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे—

नम: + ते = नमस्ते	नि: + तेज = निस्तेज
मन: + ताप = मनस्ताप	नि: + संताप = निस्संताप
दु: + तर = दुस्तर	दु: + साहस = दुस्साहस

6. विसर्ग का लोप हो जाना :

(i) यदि विसर्ग के बाद 'छ' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और 'च' का आगम हो जाता है; जैसे—

अनु: + छेद = अनुच्छेद
छत्र: + छाया = छत्रच्छाया

(ii) यदि विसर्ग बाद 'र' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे—

नि: + रोग = नीरोग
नि: + रस = नीरस

(iii) यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—

अत: + एव = अतएव

7. विसर्ग में परिवर्तन न होना : यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो तथा बाद में 'क' या 'प' हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता; जैसे—

प्रात: + काल = प्रात: काल
अंत: + करण = अंत: करण
अंत: + पुर = अंत: पुर
अध: + पतन = अध: पतन

अपवाद : नम: एवं पुर: में विसर्ग का स् हो जाता है; जैसे—

नम: + कार = नमस्कार पुर: + कार = पुरस्कार

Gupta Classes

कारक

कारक—संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) संबंध हो, उसे 'कारक' कहते हैं। जैसे—राम ने रावण को बाण से मारा।

इस वाक्य में राम क्रिया (मारा) का कर्ता हैं; रावण इस मारण क्रिया का कर्म है; वाण से यह क्रिया सम्पन्न की गई हैं, अत: वाण क्रिया का साधन होने के कारण है।

J कारक एवं कारक चिह्न

हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गई है। इन कारकों के नाम एवं उनके कारक चिह्नों का विवरण इस प्रकार है।

कारक	कारक चिह्न	कारक	कारक चिह्न
कर्ता	ने	कर्म	को
करण	से, के द्वारा	सम्प्रदान	को, के लिए
अपादान	से	संबंध	का, की, के,; रा, री, रे; ना, नी, ने
अधिकरण	में, पर	सम्बोधन	ऐ!, हे!, अरे! ओ!

कारकों की पहचान : कारकों की पहचान कारक चिह्नों से की जाती है। कोई शब्द किस कारक मे प्रयुक्त है, यह वाक्य के अर्थ पर भी निर्भर है। सामान्यत: कारक निम्न प्रकार पहचाने जाते हैं—

कर्ता (Nominative)	क्रिया को सम्पन्न करने वाला
कर्म (Accurative)	क्रिया से प्रभावित होने वाला
करण (Instrumental)	क्रिया का साधन या उपकरण
सम्प्रदान (Dative)	जिसके लिए कोई क्रिया सम्पन्न की जाय या जिसें कुछ प्रदान किया जाय।
अपादान (Ablative)	जहाँ अलगाव हो वहाँ ध्रुव या स्थिर में अपादान होता है। अलगाव के अलावे कारण, तुलना, भिन्नता, आरंभ, सीखने आदि का बोधक
संबंध (Genitive)	जहाँ दो पदों का पारस्परिक संबंध बताया जाए।
अधिकरण (Locative)	जो क्रिया के आधार (स्थान, समय, अवसर) आदि का बोध कराये।
सम्बोधन (Vocative)	किसी को पुकार कर सम्बोधित किया जाय।

वाक्य में कारक संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। इनका निराकरण करके वाक्य को शुद्ध बनाया जाता है। जैसे—

कारक	विभक्तियाँ	कारक	विभक्तियाँ
कर्त्ता	ने	अपादान	से
कर्म	को	संबंध	का, के, की, रा, रे, री
करण	से	अधिकरण	में, पर
संप्रदान	को, के लिए	संबोधन	हें, अजी, अहो, अरे

करण और अपादान में अन्तर

करण और अपादान दोनों कारकों में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है किन्तु दोनों में मूलभूत अंतर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है। कर्ता कार्य सम्पन्न करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कहते हैं। जैसे

मैं **कलम** से लिखता हूँ।

यहाँ कलम लिखने का उपकरण है अत: **कलम** शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ हैं।

अपादान में उपाय (अलगाव) का भाव निहित है। जैसे—**पेड़** से पत्ता गिरा।

अपादान कारक पेड़े में है, पत्ते में नहीं। जो अलग हुआ है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता अपितु जहाँ से अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक होता है। पेड़े तो अपनी जगह स्थिर है, पत्ता अलग हो गया अत: ध्रुव (स्थिर) वस्तु में अपादान होगा। एक अन्य **उदाहरण**—वह गाँव से चला गया। यहाँ **गाँव** में अपादान कारक है।

- **कर्त्ता कारक :** श्याम **ने** पढ़ा।
- कर्म कारक : सीता ने राम **को** पुस्तक दी
- **करण कारक :** श्याम ने पेन **से** पत्र लिखा।
- **संप्रदान कारक :** श्याम **के लिए** पेन खरीदा।
- **अपादान कारक :** लड़की माता-पिता **से** बिछुड़ गई।
- **संबंध कारक :** यह राम **की** पुस्तक है।
- **अधिकरण कारक :** श्याम दिन **में** सोता है।
- **संबोधन कारक : हे बच्चों!** चलो खेलो।

समास

समान का शाब्दिक अर्थ है 'संक्षेप'। समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है।

समास : दो अथवा दो से अधिक शब्दों में मिल कर शब्द बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

समस्त-पद/सामासिक पद : समास के नियमों से बना शब्द समस्त-पद या सामासिक शब्द कहलाता है।

समास के भेद

समास के छह मुख्य भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास : जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

पहचान : पहला पद अनु, आ, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि होता है।

पूर्वपद-अव्यय	+	उत्तरपद	=	समस्त-पद	विग्रह
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	इच्छा के विरुद्ध
हाथ	+	हाथ	=	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में

2. तत्पुरुष समास : जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता हैं तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

राजा का कुमार = राजकुमार,
धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रन्थ,
रचना को करने वाला = रचनाकार

तत्पुरुष समास के भेद : विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष (द्वितीया तत्पुरुष) : इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त पद
गगन को चूमने वाला	गगनचुंबी
ग्राम को गया हुआ	ग्रामगत
जेब को कतरने वाला	जेंबकतरा

(ii) करण तत्पुरुष : (तृतीया तत्पुरुष) इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
करुणा से पूर्ण	करुणापूर्ण
शोक से ग्रस्त	शोकग्रस्त
मन से चाहा	मनचाहा

(iii) संप्रदान-तत्पुरुष : (चतुर्थी तत्पुरुष) इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
प्रयोग के लिए शाला	प्रयोगशाला
यज्ञ के लिए शाला	यज्ञशाला
देश के लिए भक्ति	देशभक्ति

(iv) अपादान तत्पुरुष : (पंचमी तत्पुरुष) इदसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है, जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
धन से हीन	धनहीन
पद से च्युत	पदच्युत
जल से हीन	जलहीन

(v) संबंध तत्पुरुष : (षष्ठी तत्पुरुष) इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
राज के पुत्र	राजपुत्र
पर के अधीन	पराधीन
विद्या का सागर	विद्यासागर

(vi) अधिकरण तत्पुरुष : इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
शोक में मग्न	शोकमग्न
आप पर बीती	आपबीती
आनंद में मग्न	आनंदमग्न

नोट : तत्पुरुष समास के उपर्युक्त भेदों के अलावे कुछ अन्य भेद भी है, जिनमें प्रमुख है नञ् समास।

नञ् समास : जिस समास के पूर्व पद मे निषेधसूचक/नकारात्मक शब्द (अ, अन्, न, ना, गैर आदि) लगे हों; जैसे—अधर्म (न धर्म), अनिष्ट (न इष्ट), अनावश्यक (न आवश्यक), नापसंद (न पसंद), गैरवाजिब (न वाजिब) आदि।

3. कर्मधारय समास : जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद मे उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में 'है जो', 'के समान' आदि आते हैं।

विग्रह	समस्त-पद
कमल के समान चरण	चरणकमल
कमल के समान नयन	कमलनयन
मृग के समान नयन	मृगनयन

4. द्विगु समास : जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान होता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
सात सिंधुओं का समूह	सप्तसिंधु
तीनों लोकों का समाहार	त्रिलोक
चार राहों का समूह	चौराहा

5. द्वंद्व समास : जिस समस्त-पद के दोनों पर प्रधान हों तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो वह द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : दोनों पदों के बीच प्राय: योजक चिह्न (-) का प्रयोग

विग्रह	समस्त-पद
नदी और नाले	नदी-नाले
सुख और दु:ख	सुख-सु:ख
देश और विदेश	देश-विदेश

6. बहुब्रीहि समास : जिस समस्त-पद में कोई पद प्रधान नहीं होता, दोनों पद मिल कर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, उसमें बहुव्रीहि समास होता है, जैसे—'नीलकंठ', नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव। यहाँ पर दोनों पदों ने मिल कर एक तीसरे पद 'शिव' का संकेत किया, इसलिए यह बहुव्रीहि समास है :

समस्त-पद	विग्रह
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका (गणेश)
दशानन	दस हैं आनन जिसके (रावण)
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु)

Guptaclasses

अभ्यास समास

1. दो या दो से अधिक पदों के मेल को क्या कहते हैं?
(अ) प्रत्यय (ब) उपसर्ग
(स) समास (द) संधि

2. निम्नलिखित पदों में से किस पद में समास नहीं है?
(अ) हाथोंहाथ (ब) राजाध्यक्ष
(स) पर्वतारोही (द) सौभाग्य

3. किसमें सही सामासिक पद है?
(अ) पुष्पधन्वी (ब) दिवारात्रि
(स) त्रिलोकी (द) मन्त्रीपरिषद्

4. तुलसीकृत में कौन सा समास है?
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) द्वंद्व (द) बहुब्रीहि

5. निम्नांकित प्रश्न में दिए गए समास का सही विकल्प चुनिए :
तत्पुरुष समास
(अ) रसोईघर (ब) त्रिभुवन
(स) नवयुवक (द) सीता-राम

6. पुरुषोत्तम में कौन-सा समास है?
(अ) अव्ययीभाव (ब) द्वन्द्व
(स) द्विगु (द) तत्पुरुष

7. रेलभाड़ा का सही समास कौन-सा है?
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) बहुब्रीहि (द) द्वन्द्व

8. आजन्म शब्द का समास बताइए
(अ) द्वंद्व (ब) नञ् तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) अव्ययीभाव

9. इनमें से द्विगु समास का उदाहरण है
(अ) पीतांबर (ब) नेत्रहीन
(स) चौराहा (द) रुपया पैसा

10. निम्नांकित प्रश्न में दिए गए समास का सही विकल्प चुनिए
(अ) नवरत्न (ब) लेनदेन
(स) नीलकंठ (द) यथाशक्ति

11. सप्तसिंधु का सही समास कौन सा है?
(अ) द्विगु (ब) बहुब्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव

12. यथाशक्ति में कौन सा समास है?
(अ) तत्पुरुष समास (ब) द्वंद्व समास
(स) अव्ययीभाव समास (द) कर्मधारय समास

13. महापुरुष में कौन सा समास है
(अ) द्वंद्व समास (ब) द्विगु समास
(स) बहुब्रीहि समास (द) कर्मधारय समास

14. निम्नलिखित में कमलनयन कौन सा समास है?
(अ) द्विगु समास (ब) तत्पुरुष समास
(स) बहुब्रीहि समास (द) कर्मधारय समास

15. निम्नांकित प्रश्न में दिए गए समास का सही विकल्प चुनिए :
(अ) कामचोर (ब) स्वर्णाक्षर
(स) पंचवटी (द) रोगपीड़ित

16. गुणहीन में कौन-सा समास है?
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) अव्ययीभाव (द) द्वन्द्व

17. श्याम सुंदर में कौन-सा समास है
(अ) तत्पुरुष (ब) कर्मधारय
(स) अव्ययीभाव (द) बहुब्रीहि

18. आकंठ में कौन सा समास है?
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) बहुब्रीहि (द) कर्मधारय

19. किस समास के दोनों शब्दों को समानाधिकरण होने पर कर्मधारय समास होता है?
(अ) तत्पुरुष (ब) द्वंद्व
(स) अव्ययीभाव (द) बहुब्रीहि

20. जब प्रथम शब्द संख्यावाची और दूसरा शब्द संज्ञा हो, तब कौन सा समा होगा?
(अ) तत्पुरुष (ब) द्विगु
(स) अव्ययीभाव (द) द्वंद्व

21. पीतांबर शब्द में कौन-सा समास है?
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) द्वंद्व (द) द्विगु

22. नीचे दिए गये सामासिक शब्दों में कौन-सा नञ् समास का उदाहरण है?
(अ) अनिष्ट (ब) कुरंगनयन
(स) मुखचंद्र (द) शीतोष्ण

23. प्रतिदिन से समास है :
(अ) द्वंद्व (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) तत्पुरुष

24. त्रिभुवन निम्नलिखित में से कौन सा समास है
(अ) द्विगु तत्पुरुष (ब) बहुब्रीहि
(स) अव्ययीभाव (द) कर्मधारय

25. नील कमल में कौन-सा समास है
(अ) तत्पुरुष (ब) कर्मधारय
(स) द्विगु (द) बहुब्रीहि

26. नीलकमल में कौन-सा समास है?
(अ) बहुब्रीहि (ब) कर्मधारय
(स) द्वंद्व समाम (द) अव्ययीभाव समास

27. दिन-रात में कौन सा समास है?
(अ) द्विगु (ब) कर्मधारय
(स) तत्पुरुष (द) द्वंद्व

28. निम्नलिखित में से उपयुक्त समास का चयन कीजिए—
माता-पिता
(अ) द्वंद्व (ब) तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) अव्ययीभाव

29. पाप-पुण्य का सही समास कौन सा है
(अ) अव्ययीभाव (ब) द्विगु
(स) द्वंद्व (द) कर्मधारय

30. दयालु है जो प्रभु में, कौन सा समास है
(अ) कर्मधारय (ब) अव्ययीभाव
(स) बहुब्रीहि (द) तत्पुरुष

Gupta Classes

31. एकदंत निम्न में से कौन सा समास है
(अ) तत्पुरुष (ब) बहुब्रीहि
(स) द्वन्द्व (द) कर्मधारय

32. नीला है जो कमल, में समास है—
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) अव्ययीभाव (द) द्वन्द्व

निर्देश (34-156) : निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न में सामासिक शब्द दिया गया है। उसके नीचे उसमें प्रयुक्त समास के लिए चार-चार विकल्प दिए गए है, इनमें सर्वाधिक सही समास का चयन कीजिए

33. आजन्म:
(अ) तत्पुरुष (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

34. यथासंभव:
(अ) तत्पुरुष (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

35. यथायोग्य :
(अ) तत्पुरुष (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

36. लाजवाब:
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

37. सम्मुख:
(अ) द्विगु (ब) तत्पुरुष
(स) अव्ययीभाव (द) कर्मधारय

38. गगनचुम्बी:
(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व
(स) तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव

39. मंदबुद्धि:
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

40. रससिक्त:
(अ) संप्रदान तत्पुरुष (ब) संबंध तत्पुरुष
(स) करण तत्पुरुष (द) कर्म तत्पुरुष

41. यज्ञशाला:
(अ) कर्मधारय (ब) बहुब्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव

42. राजद्रोह:
(अ) संप्रदान तत्पुरुष (ब) अपादान तत्पुरुष
(स) अधिकरण तत्पुरुष (द) संबंध तत्पुरुष

43. सत्रावसान:
(अ) द्वन्द्व (ब) तत्पुरुष
(स) द्विगु (द) कर्मधारय

44. कविपुंगव:
(अ) अव्ययीभाव (ब) द्विगु
(स) द्वन्द्व (द) तत्पुरुष

45. जलज:
(अ) उपपद तत्पुरुष (ब) अलुक् तत्पुरुष
(स) नत्र् तत्पुरुष (द) संबंध तत्पुरुष

46. जलद:
(अ) अलुक् तत्पुरुष (ब) उपपद तत्पुरुष
(स) नत्र् तत्पुरुष (द) संबंध तत्पुरुष

47. मुनिश्रेष्ठ:
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) अव्ययीभाव (द) बहुब्रीहि

48. अधपका:
(अ) कर्मधारय समास (ब) बहुब्रीहि
(स) अव्ययीभाव (द) तत्पुरुष

49. गतांक:
(अ) कर्मधारय (ब) बहुब्रीहि
(स) अव्ययीभाव (द) तत्पुरुष

50. नीलोत्पल:
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) द्विगु (द) द्वन्द्व

51. महापुरुष:
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) द्विगु (द) द्वन्द्व

52. अठन्नी:
(अ) द्वन्द (ब) द्विगु
(स) अव्ययीभाव (द) तत्पुरुष

53. इकतारा:
(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व
(स) कर्मधारय (द) बहुब्रीहि

54. पंचपात्र:
(अ) अव्ययीभाव (ब) द्वन्द्व
(स) द्विगु (द) बहुब्रीहि

55. नवरात्रि:
(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व
(स) बहुब्रीहि (द) कर्मधारय

56. सप्तऋषि:
(अ) तत्पुरुष (ब) बहुब्रीहि
(स) द्विगु (द) कर्मधारय

57. फल-फूल:
(अ) द्वन्द्व (ब) तत्पुरुष
(स) द्विगु (द) अव्ययीभाव

58. रामकृष्ण:
(अ) द्वन्द्व समास (ब) बहुब्रीहि समास
(स) नत्र् समास (द) कर्मधारय समास

59. दिगम्बर (जैन मुनि) :
(अ) बहुब्रीहि (ब) द्विगु
(स) द्वन्द्व (द) तत्पुरुष

60. सुपुरुष:
(अ) कर्मधारय (ब) द्वन्द्व
(स) अव्ययीभाव (द) बहुब्रीहि

61. वीणापाणि (सरस्वती):
(अ) अव्ययीभाव (ब) द्विगु
(स) बहुब्रीहि (द) द्वन्द्व

Gupta Classes